अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका –

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम हैं, चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हों। शेधकार्य के अन्तर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जानेवाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार के पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी – अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करते एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता हैं और न ही उस दिशा में सफल हो सकता हैं।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ –

संबंधित सहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है, तथा निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारित करने में सहायता मिलती है।
2. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वार किया जा चुका है, उसकी जानकारी प्राप्त की जा सकता है।
3. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां पर हैं, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही कार्य आगे बढ़ाया जा सकता हैं।
4. पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
6. उपयुक्त शोध विधियों के चयन में सहायता करता है।
7. परिकल्पनाओं को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 पूर्वशोध आकलन –

- **पानु, एस. आर. (एम.एड 1964)**, चण्डीगढ़, पंजाब युनिवर्सिटी के द्वारा चण्ड़ीगढ़ के माध्यमिक विद्यालय के 80 अध्यापकों के न्यादर्श पर एक अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि उनके रूचि के अनुकूल विषयों को पढ़ने, उनके योग्यतानुसार सम्मान एवं वेतन की मात्रा, पदोन्नति की विधियों एवं अध्यापकों के प्रति लोगों के दृष्टिकोंण पर निर्भर है। अध्यापकों की संतुष्टि के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक कारकों का प्रयोग करते हुए प्रश्नावली प्रपत्र का निर्माण किया गया

था एवं दो बिन्दु तक अर्थपूर्णता के परीक्षण से उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त किये गये। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि व्यावसायिक संतुष्टि का आयु, लिंग, योग्यता एवं वैवाहिक स्थिति में कोई अर्थपूर्ण संबंध नहीं है।

साक्षात्कार के समय उक्त अनुसंधानकर्ता ने यह भी अनुभव किया है कि अध्यापकों की मानसिक कुष्ठा का मुख्य कारण विद्यालयीन प्रशासन संबंधित कारक थे। सभी अध्यापकों ने दस ऐसें प्रशासन संबंधी कारक बताए हैं कि विद्यालय में व्यवधान डालते हैं, उनमें से मुख्य है -

(अ) शिक्षण के अतिरिक्त कार्यभार

(ब) विद्यालय का समय

(स) अनुत्तम परीक्षाफल के लिए अध्यापक को दंड।

(द) अधिकारियों द्वारा उनके दैनिक कार्य में बाधा।

इन्ही अध्यापकों से सत्य सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के लिए 10 व्यवसायों में से व्यवसाय चुनकर उन्हे क्रमानुसार लिखने को कहा गया और यह देखा गया कि उन लोगों ने अध्यापन व्यवसाय के लिए सातवां स्थान दिया था। 90 प्रतिशत अध्यापकों का प्रतिवेदन शिक्षण व्यवसाय के विरोध में था।

- **रेड्डी, बालकृष्ण पी. (1989)**, ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य व्यावसायिक संतुष्टि स्तर, अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना, लिंग, वैवाहिक स्तर, शैक्षणिक योग्यता, कुटुंब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्वकारक के आधार पर व्यवसाय के संबंधो का अध्ययन करना था। इसके लिए बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से 300 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया था।

प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यवसाय संतोष सूची, शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति रूचि, कैटल की 16 पी.एफ. प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक संबंध होता है। व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है कि सात कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि देखने को मिलती है, जबकि नौ कारकों के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है। व्यक्तित्व के चार कारकों और व्यवसाय सूची को जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उसमें सार्थक अंतर पाया जाता है।

D - 326

- **तपोधन, एल.एन.(1991),** ने गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोंण का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य लिंग, क्षेत्र, जाति, योग्यता, विद्यालय के प्रकार, वैवाहिक स्तर, उम्र एवं अनुभव के आधार पर शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोंण किया है वह जानना था। सर्वे विधि से 19 जिले में से 224 विद्यालयों का चयन किया गया। 1644 पुरूष, 942 महिला शिक्षक का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वंय शोधकर्ता ने लिर्कट टाईप अभिवृत्ति सूची प्रमाणितकृत की थी। जिसका निष्कर्ष यह आया कि लिंग, क्षेत्र, एवं जाति, इनका अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति पर अधिक प्रभाव पडता है। योग्याता का शिक्षकों के अध्यापन व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। क्षेत्र एवं जाति, क्षेत्र एवं योग्यता, जाति एवं योग्यता, लिंग क्षेत्र और जाति एवं योग्यता इनके बीच अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

Regional Institute of Education LIBRARY

- **लाल संग्लीगनी (1991)** ने हाईस्कूल के अध्यापकों की आर्थिक सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उन्होने तीन उद्देश्य रखे।

(i) हाई स्कूल के अध्यापकों द्वारा अनुभव की जाने वाली आर्थिक – सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का पता लगाना।

(ii) समस्याओं के लिये उत्तरदायी कारकों का पता लगाना तथा

(iii) आर्थिक – सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं को कम करने हेतु उपाय सुझाना।

इसके लिए उन्होने केम्पाई संभाग, मेजोरम के 25 हाईस्कूल का चयन किया गया। उपकरण के रूप में साक्षात्कार तथा प्रश्नावली का उपयोग किया गया तथा प्रतिशत की सहायता से संभावित प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन के प्रमुख परिणाम के रूप में –

(i) प्राइवेट तथा एडहॉक हाईस्कूल में कार्यरत शिक्षकों के लिये कार्य शर्ते वेतनमान तथा सेवा के अन्त में मिलने वाली सुविधाऐं, शासकीए अध्यापकों को दी जा रही सुविधाओं से भिन्न हैं।

(ii) प्राइवेट स्कूल अध्यापक अपने आपको अधिक असुरक्षित महसूस करते हैं।

(iii) अध्यापकों के लिये उपलब्ध ट्रेनिंग प्रोग्राम अनेक दोषों से युक्त है।

(iv) स्कूल के हेडमास्टर तमाम सुविधाओं के बाबजूद फाइनेंस तथा अध्यापकों की कमी जैसी समस्याऐं महसूस करते हैं।

- **मट्टू, बी, के, और चन्द्र शेखर(1992),** ने एकल तथा द्वि अध्यापक वाले प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों द्वारा अनुभव की गयी समस्याओं को पहचानने के लिए अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालय की आधारभूत सुविधाओं, ओ.बी. का उपयोग, मल्टी ग्रेड टीचिंग पालक तथा समुदाय से संबंध, व्यक्गित तथा प्रशासनिक कार्यो से संबंधित समस्याओं के परिपेक्ष्य में अध्ययन करता था।

  अध्ययन के तीन राज्य मध्यपदेश, बिहार, राजस्थानके विभिन्न जिलों में 642 अध्यापकों का चयन किया गया। जो किसी न किसी एकल या द्विअध्यापक स्कूल से कार्यरत थे। प्रदत्तों के संग्रहण के लिए हिन्दी भाषा में बृहद प्रश्नावली तैयार की गयी। विश्लेषण हेत प्रतिशत का उपयोग किया। मुख्य परिणामों के रूप में

  (i) अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधा उपलब्ध नही थी।

  (ii) 80 प्रतिशत अध्यापकों ने इस बात की आवश्यकता महसूस की, कि ओ. बी. के कक्षा में उपयोग करने के लिये ट्रेनिंग करवाई जाये।

  (iii) मल्टीग्रेड टीचिंग से अधिकतर अध्यापक ने असमर्थत व्यक्त की।

  (iv) 86 प्रतिशत अध्यापकों ने मल्टी ग्रेड टीचिंग के लिये प्रशिक्षण कराने की आवश्कता महसूस की।

  (v) अध्यापकों द्वारा महसूस की गई समस्याओं में प्रशासनिक, व्यक्तिगत तथा नये जगह पर स्थानान्तरण के उपरान्त उत्पन्न समस्याओं को बलपूर्वक इंगित किया।

- **खातून, ताहिरा और हसन, जेड (2000),** ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के पद संतुष्टि का उनके व्यक्गित चरों (लिंग अनुभव, व्यवसायिक प्रशिक्षण, वेतन और धर्म) के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। अध्ययन के दो उद्देश्य थे पहला माध्यमिक शाला अध्यापकों में पद के सापेक्ष पद संतुष्टि की जांच करना तथा दूसरा उद्देश्य पद संतुष्ट में व्यक्तिगत कारकों में संबंध स्थापित करना था।

  अध्ययन के लिये 228 माध्यमिक शाला शिक्षकों का चुनाव किया गया जिसमें 169 पुरूष शिक्षक तथा 59 महिला शिक्षक थी। प्रदत्तों के संकलन के लिए वर्मा (1972) के जॉव सेटिसफेक्शन स्केल का उपयोग किया गया। तथा प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिये 'टी' टेस्ट का उपयोग किया गया। अध्ययन के मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे।

  (i) अधिकतर अध्यापक अपने पद से संतुष्ट थे।

  (ii) महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षक की अपेक्षा अपने पद से अधिक संतुष्ट थी।

  (iii) नये शिक्षकों को अनुभवी शिक्षकों से कम वेतन मिलता था।

  (iv) शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम पद संतुष्टि पर विपरीत प्रमाण देखा गया।

  (v) धर्म का पद संतुष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

- **पाण्ड्रा, बी.बी. (2001),** ने आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय एवं कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। शोधकार्य के उद्देश्य आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और विभिन्न वर्गों जैसे कि लिंग, अनुभव, स्थान के स्तर के आधार पर अध्ययन

करना, आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर अध्ययन करना। आसाम और उड़ीसा कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय और कार्य संतुष्टि की अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना यह निश्चित किय गए थे। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्यति का उपयोग किया गया । प्रदत्तों के संकलन हेतु आरब्रोक (1962) निर्मित "शिक्षक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। अनुसंधानकर्ता द्वारा बनायी गयी और प्रमाणित की गयी व्यावसायिक संतुष्टि सूची का उपयोग किया अनुसंधानकर्ता द्वारा बनायी गयी और प्रमाणित की गयी व्यावसायिक संतुष्टि सूची का उपयोग किया गया। शोधकार्य में पाया गया कि" –

आसाम और उड़ीसा के ज्यादातर कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण व्यवस्था के प्रति अभिवृत्ति है। दोनो राज्यों के 25 प्रतिशत कॉलेज शिक्षण लिंग, अनुभव स्थान, स्तर के आधार पर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति रखते हैं। आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों में लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही पाया गया।

- **शशि चिचौड़ा (2002),** ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्ययाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिये 60 अध्यापकों का चयन किया गया। विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

समग्र न्यादर्श शिक्षकों की क्षेत्रवार समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण –

(अ) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की आकादमिक समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

❖ विद्यालय के स्तरानुकूल विषय – वस्तु की अधिकता हैं।
❖ विद्यालय के अतिरिक्त अध्यापन कार्य करना होता है।
❖ विषय के अतिरिक्त अध्यापन कार्य करना होता है।
❖ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर कम बल दिया जाता है।
❖ अन्य पाठ्य सहगामी कार्य सौपने पर शिक्षण कार्य में छूट नहीं मिलती है।
❖ प्रधानाध्यापक द्वारा किए हस्तक्षेप एवं कार्याधिक्य से शिक्षण कार्य अवरूद्ध होता है।
❖ प्रशिक्षण प्राप्त कौशल का लाभ नही मिलता है एवं
❖ प्रत्येक कालांश में पढ़ाने से नीरसता अनुभव होती है।

(ब) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की प्रशासनिक समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

❖ प्रशासनिक निर्णयों में शिक्षकों की भागीदारी नही होती है।
❖ छोटे – छोटे कार्यो के लिए प्रशासन की अनुमति प्राप्त करनी होती है।
❖ स्टाफ मीटिंग में निर्णय की अपेक्षा आदेश पालन पर बल दिया जाता है।
❖ व्यावसायिक प्रगति हेतु सेमिनार, कार्यगोष्ठियों में भाग लेने के अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं।
❖ प्रशासनिक नीतियों में होने वाले बार – बार परिवर्तनों से शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

(स) समग्र न्यादर्श शिक्षको की वित्तीय समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

❖ शिक्षकों को समय पर वेतन नहीं मिलता है।

❖ शोध कार्य के लिए विद्यालय से वित्तीय सहयोग नहीं मिलता हैं।

❖ राजकोषीय राशि से विद्यालय की आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है।

❖ मकान बनाने, वाहन खरीदने के लिए ऋण सुविधा आसानी से नहीं मिलती है।

(द) समग्र न्यादर्श शिक्षको की भौतिक समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए। पीने की लिए स्वच्छ पानी का अभाव है।

❖ शिक्षकों की संख्या छात्र संख्या के अनुपात में उचित नहीं है।

❖ प्रायोगिक कुशलताओं के विकास के लिए पर्याप्त सामग्री का अभाव है।

❖ प्राथमिक चिकित्सा सुविधा का अभाव हैं।

❖ विद्यालय के कक्षा – कक्षों का क्षेत्रफल छात्र संख्या के अनुरूप नहीं है।

❖ शिक्षकों के लिए पृथक बैठक व्यवस्था नहीं हैं।

❖ विज्ञान तथा गणित विषयों में शिक्षण के लिए सहायक सामग्री का अभाव।